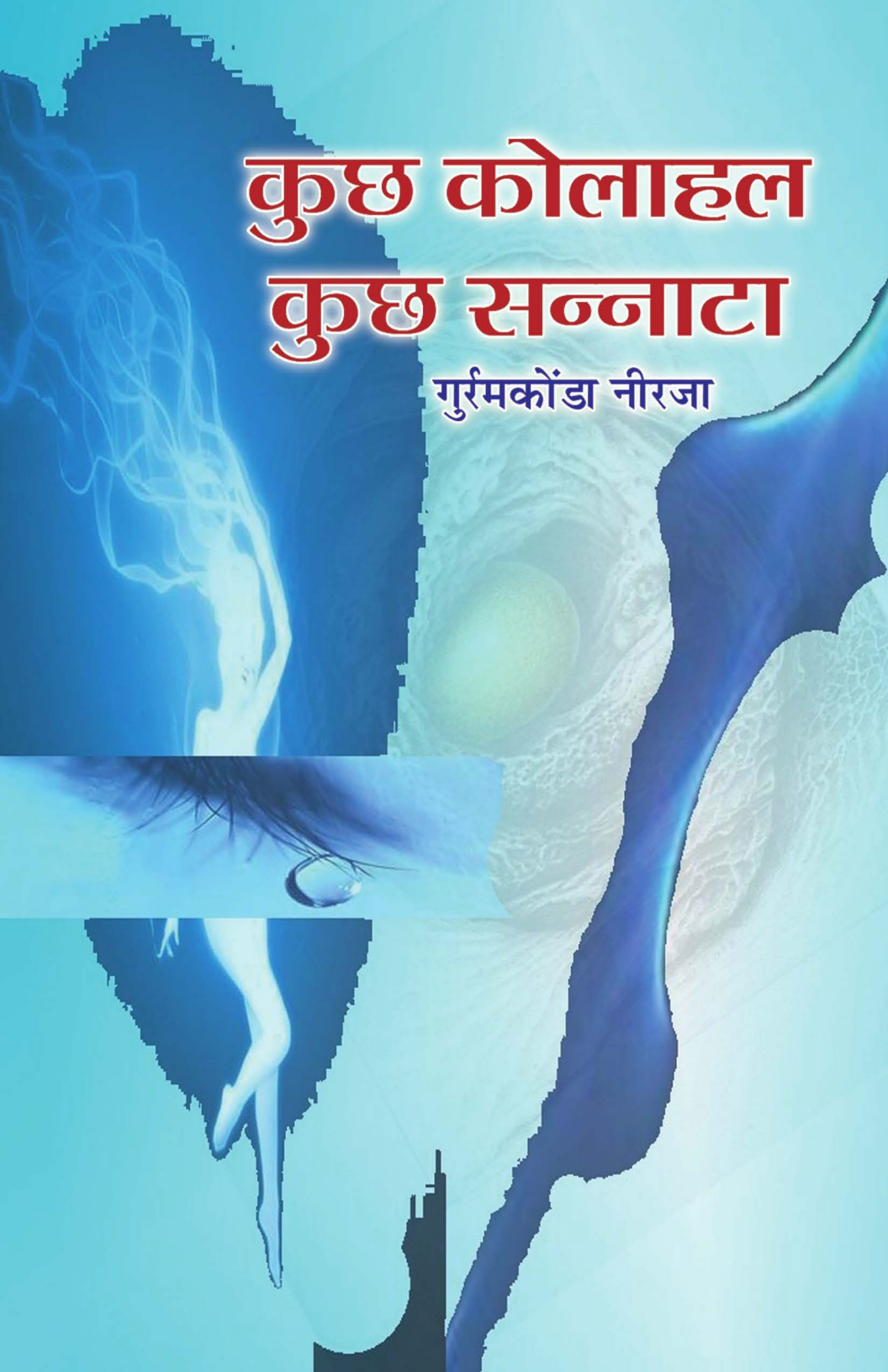

कुछ कोलाहल कुछ सन्नाटा

गुर्रमकोंडा नीरजा

कुछ कोलाहल, कुछ सन्नाटा
(कविताएँ)
गुर्रमकोंडा नीरजा

© गुर्रमकोंडा नीरजा

इस पुस्तक के किसी भी अंश का किसी भी रूप में, चाहे इलेक्ट्रॉनिक अथवा मैकेनिक तकनीक से, फोटोकॉपी द्वारा या अन्य किसी प्रकार से पुनर्प्रकाशन अथवा पुनर्मुद्रण, लेखक की लिखित अनुमति के बिना नहीं किया जा सकता है।

प्रथम संस्करण : 2019

ISBN : 978-93-84068-78-3

मूल्य : ₹ 150/-

प्रकाशक :
परिलेख प्रकाशन
कोतवाली रोड, वालिया मार्केट,
नजीबाबाद - 246763
मोबाइल : +91 9837120022

आवरण : गुर्रमकोंडा शिरीष बाबु

मुद्रक :
साई लिखिता प्रिंटर्स, खैरताबाद, हैदराबाद - 500 004
मोबाइल : +91 7207045979

KUCHH KOLAHAL, KUCHH SANNATA (Poetry, 2019)
By Gurramkonda Neeraja

अनुक्रम

पुरोवाक्
स्वच्छंद आकाश में...
कुछ कोलाहल, कुछ सन्नाटा

मौलिक कविताएँ

माँ! 25
बेटी वाली माँ 26
यही है महानगर! 28
प्रलय तांडव! 30
आशियाना 32
टेलेंट 33
राजनीति 34
हक की लड़ाई 35
ओ मेरे पिता! 36
एक ही तत्व 38
मेरे साजन 39
खोज 40
अर्ध बेहोशी 42
मिलत-खिलत-लजियात 43
झोंका 44
बर्फ 45
संधिपत्र 46

स्त्री 47
विरेचन 48
खामोशी 49
तीन शब्द 49
खबरदार ! 50
तुम... ? 50
नि:शब्द 51
बिजली 51
रेशमी स्पर्श 52
कोलाहल 53
अंकुरण 53
प्यार की खातिर 54
धोखा 54
हरजाई 55
तपिश 56
खतरे में बेटियाँ 57
दर्द 58
आग 59
लू चल रही है 60
समस्या 60
उड़ती परियाँ 61
फ़रिश्ते का आश्वासन 63
चमड़ा 64
गर्भ से 65
होली के हाइकु 66
दुख 67

किताब 67
चाय 67
राह 67
हैदराबाद 68
गीत 68
पंछी 68
काँटा 68
रियर ग्लास 68
बीज 69
जिजीविषा 69
वार्धक्य 69
योजनाएँ 69
डिग्रियाँ 69
ईमान 70
जीवन 70
सृजन 70
सीखना 71

तेलुगु से हिंदी में अनूदित कविताएँ

(मूल : कालोजी नारायण राव)

एक और महाभारत 75
इच्छा 77
विडंबना 79
साजिश 80
वोटों का क्या कहना 82
झूठी प्रशंसा 83
मुझे क्या हुआ? 85

इस देश की क्या दशा 86
बीस सूत्रों की दांडी यात्रा 90
शर्म करो, मुख्यमंत्री 92
पराभव निश्चित है 97

हिंदी से तमिल में अनूदित कविताएँ

गुड़िया-गाय-गुलाम (मूल : ऋषभदेव शर्मा) 100
बोम्मै-पसु-अडिमै 101
मुझे पंख दोगे ? (मूल : ऋषभदेव शर्मा) 102
एनक्कु रेक्कै कोडुप्पाया 103
असमंजस (मूल : ऋषभदेव शर्मा) 104
संदेगनिलै 105
प्यार (मूल : ऋषभदेव शर्मा) 106
अन्बु 107
साधना (मूल : कविता वाचक्नवी) 108
साधनै 109
गौरैया (मूल :कविता वाचक्नवी) 110
अन्न पिरवै 111
अभ्यास (मूल : कविता वाचक्नवी) 112
पयिर्चि 112

परिशिष्ट

नत नयन, प्रिय कर्मरत मन नीरजा 114

माँ !

कोख में अपने रक्त-मास से सींचकर
उसने मुझे जन्म दिया
और अपनी छाती चीर कर
पिलाया दूध,
जाने कितनी रातें अपलक जागती रही
हर पल हर लम्हा मेरे बारे में सोचती।

खुद कष्ट झेलती रही
कँटीली राहों पर
और मेरी खुशी के लिए
करती रही हर पल भगवान से याचना,
सँवारती रही मेरे सपने
वार कर अपनी तमाम इच्छाएँ।

आज वह मेरी राह देख रही है
मेरा माथा चूमने के लिए तरस रही है
आखिरी बार मुझसे बात करने के लिए
आँखों में प्रतीक्षा सँजोए।

मैं काले कोसों बैठी हूँ
सात समंदर पार,
लाचार।

मन तो कभी का पहुँच चुका उसके पास,
तन काट नहीं पा रहा
परिस्थिति का पाश।
उदास हूँ।
दास हूँ न?
स्वामी की अनुमति नहीं!

हक की लड़ाई

शक्ति बिना शिव अधूरा
राधा बिना श्याम
नारी बिना नर अधूरा
सीता बिना राम।

फिर भी ऐ औरत
सोच !
सोच उन सुविधाओं के बारे में
जो प्रकृति ने तुझे दीं और
समाज ने खसोट लीं...

पैदा तो हुई तू
पुरुष की साथिन के रूप में
दैया रे दैया !
उसी की गुलाम बन गई!

कभी किसी की बेटी बनी
तो कभी किसी की प्रेयसी
कभी किसी की पत्नी
तो कभी किसी की जननी।

जाग! जाग! जाग! हे विभामयी!
जाग! जाग अपनी चिर निद्रा से।
तोड़ अपनी बेड़ियों की माया
और लड़ अपने हक की लड़ाई!

मिलत-खिलत-लजियात

मन में इच्छा जगी
तुझे बार-बार देखने की
पर क्या करूँ
भरे भवन में लाचार थी।
पर यह पागल मन सुने तो न!
गुब्बारा बन उड़ने लगा
तुझे बार-बार निहारने लगा
आँखों की प्यास बुझाने लगा
मर्म भरे गीत गुनगुनाने लगा।
उस पहले स्पर्श को याद कर मुस्कुराने लगा
प्रेम का फव्वारा फूट पड़ा
मैं नहाती रही तेरे दरस-परस के सुख में।

खतरे में बेटियाँ

भीगी भीगी ठंडी शब्दहीन चीख
पर उसने तो वीभत्स हँसी हँसकर अट्टहास किया।

वह बस छोटी-सी गुड़िया थी
गुड्डे-गुड़ियों से खेलती।
उस दिन भी खेलने के लिए ही तो
खुशी-खुशी घर की दहलीज पार की थी।
पर उसे क्या पता था
दरिंदा वहीं से उठाकर ले जाएगा
नोच-नोचकर खसोट-खसोटकर खा जाएगा!

गुड़िया चीखते-चीखते मर गई
जिंदा लाश बन गए उसके माँ-बाप।

सड़क पर चलते
पीछे से कोई पदचाप सुनाई दे तो घबरा जाते हैं
डर के मारे पसीने-पसीने हो जाते हैं
होंठ दबाकर चीख को रोक लेते हैं।

जब कभी किसी नन्ही गुड़िया को देखते हैं
बेसाख्ता चीख उठते हैं -
'गुड़िया घर से बाहर न जा
यह समाज तेरे लिए नहीं बना है
बाहर न जा
तुझे नोचकर खाने के लिए गिद्ध इंतजार कर रहा है
तू बाहर न जा।'

हैदराबाद

हैदराबाद
कुली की मुहब्बत
रहे आबाद

गीत

गीत जो गाए
हमने रोज रोज
फूल खिलाए

पंछी

पंछी के पर
नोच दिए तुमने,
कहके घर

काँटा

नुकीला काँटा
धँसा पाँव में मेरे,
रोये तुम थे

रियर ग्लास

चेहरा साफ
पर करना माफ
दिल मलीन

एक और महाभारत

कन्याकुमारी का गृहप्रवेश ही
बुनियाद है कश्मीर की
समुद्र की बाष्प से
आरंभ होता है गंगा का जीवन।

साड़ी के आँचल में आग लगे तो
आपादमस्तक हाहाकार
जूड़े को पकड़कर खींचने से
पाँव अंगारों पर पड़ने की पीड़ा,
अत्याचारी के दृष्टि संकेत पर
शीलवती की आँखों में
शिव के त्रिनेत्र की ज्वाला

सैरंध्री जब जब अपमानित होगी
तब तब कीचक वध निश्चित है
द्रौपदी की प्रतिष्ठा को ठेस पहुँचाने पर
दुर्योधन की जंघा का टूटना निश्चित है
दु:शासन के वक्ष का चिरना निश्चित है

अनेकों बार कीचक का वध होने पर भी
दु:शासन का वक्ष चीरे जाने पर भी
दुर्योधन की जंघा टूटने पर भी
कर्ण का रथचक्र धरती में धँसने पर भी
कृष्ण के दूत बन जाने पर भी
एक और महाभारत निश्चित है

शर्म करो, मुख्यमंत्री

राज्यों के विभाजन के लिए
संविधान राजी है
राज्यों के विभाजन के लिए
रीति-नीति कायम है।

राज्यों के विभाजन के लिए
जनमत का समर्थन है
राज्यों के विभाजन के लिए
पूरी तैयारी है।

राज्यों के विभाजन के लिए
प्रजाशक्ति का रास्ता है
राज्यों के विभाजन के लिए
पार्लियामेंट का समर्थन है

तत्कालीन प्रधानमंत्री नेहरु की
स्वीकृति है
तत्कालीन मुख्य मंत्रियों की
स्वीकृति है

तत्कालीन अखिल भारतीय कांग्रेस अध्यक्षों की
स्वीकृति है
तत्कालीन निजलिंगप्पा की
स्वीकृति है

राज्यों को विभाजित करने पर
यदि कोई कहे कि
भारत की एकता भंग होगी
तो वह सरासर झूठ है
जनता को ठगते हैं

गुड़िया-गाय-गुलाम

(मूल : ऋषभदेव शर्मा)

परसों तुमने मुझे
चीखने वाली गुड़िया समझकर
जमीन पर पटक दिया
और पैरों से रौंद डाला पर मैंने कोई शिकायत नहीं की।

कल तुमने मुझे
अपने खूँटे की गाय समझकर
मेरे पैरों में रस्सी बाँध दी
और मेरे थनों को दुह डाला पर मैंने कोई शिकायत नहीं की।

आज तुमने मुझे
अपने हुक्म का गुलाम समझ कर
गरम सलाख से मेरी जीभ दाग दी है और अब भी चाहते हो
मैं कोई शिकायत न करूँ

नहीं!
मैं गुड़िया नहीं,
मैं गाय नहीं,
मैं गुलाम नहीं!!

End of Preview.

Rest of the book can be read @

http://kinige.com/book/Kuch+Kolahal+Kuch+Sannata

* * *